International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 03(I), July - September, 2024, pp. 108-112

मेवाड़ की रावल शाखा के सिक्के (1303 ई. तक)

डॉ. सुमित मेहता*

सार

मुद्राऐं ऐतिहासिक अध्ययन का अत्यधिक विश्वसनीय साधन मानी जाती है। प्राचीन काल से ही सिक्के आर्थिक व्यवस्था का आधार स्तम्भ माने जाते हैं। मानव जीवन की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति से लेकर बडें व्यापार, निर्माण कार्यों, धार्मिक कार्यों आदि के लिए मुद्रा आवश्यक है। मुद्रा पर अंकित नाम, उपाधि, राजचिन्ह आदि किसी भी राजा की सम्प्रभुता के परिचायक तो होते ही हैं साथ ही मुद्रा की तिथि, टकसाल का नाम, कोई घटना विशेष, मुद्रा ढालने की तकनीक, धातु, आकार, वजन आदि भी इतिहास की सही जानकारी प्रदान करने में सहायक होते हैं। सिक्कों से प्राचीन समय की आर्थिक दशा के साथ–साथ उस समय की संस्कृति का भी ज्ञान होता है। मेवाड़ के सिक्कों पर अंकित श्री लेख पवित्र एवं सम्मान का सूचक है। सिक्कों पर अंकित प्रतीक चिन्ह यथा गाय, सूर्य, त्रिशूल सनातन धर्म के प्रतीक हैं तथा एकलिंगजी का मंदिर मेवाड़ के इष्टदेव और मेवाड़ में सुदृढ़ धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को दर्शाता है। सिक्कों पर अंकित लेखों से उस समय की भाषा एवं लिपि का भी ज्ञान होता है। मेवाड़ में प्रमुख मुद्रा के रूप में इण्डोसेनियन प्रकार के सिक्के लम्बे समय तक चलन में रहे। ये सिक्के शुद्ध चांदी, तांबें एवं मिश्रित धातुओं के बने होते थे। गुहदत्त कालीन सिक्के मेवाड़ के इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। अजमेर से बप्पा रावल का सोने का सिक्का प्राप्त हुआ था। जिस पर मेवाड़ के इष्टदेव एकलिंगजी की आकृति बनी है। मेवाड़ के अन्य रावल शासकों यथा भोज, शिलादित्य, बप्पा, शालिवाहन, शुचिवर्मा, रतनसिंह आदि के राजनैतिक इतिहास की जानकारी भी सिक्कों से प्राप्त होती है।

शब्दकोशः *मुद्रा, ऐतिहासिक, धातु, राजचिन्ह, लेख, इष्टदेव, इण्डोसेनियन।*

प्रस्तावना

मानव जीवन की प्रत्येक आवश्यकता हेतु मुद्रा आवश्यक है। सामान्य भाषा में मुद्रा एक निश्चित आकार, वजन व मूल्य लिए हुए एक वस्तु है। राबर्टसन के अनुसार मुद्रा शब्द का उपयोग उन सभी वस्तुओं के लिए किया जा सकता है जो व्यापारिक लेन–देन अथवा वस्तुओं के भुगतान के रूप में स्वीकारी जाती है।

जब मानव ने समुदाय एवं समाज बनाकर निश्चित स्थानों पर घर बनाकर रहना शुरू किया तब विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता महसूस हुई और धीरे–धीरे वस्तुओं के आदान–प्रदान ने व्यापार का रूप धारण कर लिया।[1] समय के साथ व्यापार व उद्योग धन्धों के विकास के साथ ही मुद्रा तथा विनिमय की प्रणाली भी बदली।[2] धातु को उपयुक्त मानकर एक ऐसी मूल्य इकाई का विचार किया गया जो सभी में संतुलन रख सके

* सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

और इसी के फलस्वरूप सिक्कों का जन्म हुआ। सिक्के खास आकार, वजन एवं शुद्धता लिये हुए धातु के ऐसे टुकड़े होते हैं जिन पर कुछ लेख अथवा कुछ प्रतीक चिन्ह अंकित होते हैं।

भारत में सिक्कों के निर्माण के लिए सोने, चांदी तथा तांबे का प्रयोग अधिक किया जाता था। वैदिक साहित्य में सोने के सिक्के के दो नाम उल्लेखित हैं– सुवर्ण और निष्क। सुवर्ण नाम का सिक्का एक निश्चित तौल 80 रत्ती त्र 144 ग्रेन का होता था। चांदी के सिक्कों का भी शतमान, पाद शतमान, अर्द्धशतमान आदि नामों से उल्लेख प्राप्त होता है। शतमान को भारत का प्राचीनतम सिक्का माना जाता है। तांबे के सिक्के इतिहास में कम प्राप्त होते हैं। मौर्य काल में तांबे के सिक्कों का चलन अधिक माना जाता है।

राजपूताना की सबसे प्राचीन रियासत मेवाड़, जिसे आधुनिक समय में उदयपुर कहा जाता है, प्राचीन समय में शिवि जनपद, प्राग्वाट आदि नामों से जाना जाता था। इस सम्पूर्ण क्षेत्र पर मेवों का अधिकार माना जाता था। अतः इसे मेदपाट भी कहा जाता था। गुहिल के समय मेवाड़ का साम्राज्य आगरा तक फैला हुआ था। दक्षिणी पूर्वी राजस्थान, अजमेर और बयाना तक भी सांगा के अधीन थे। महाराणा कुंभा के काल में भी साम्राज्य काफी बड़ा था।

प्रारम्भ से ही यहां पर मुद्राऐं प्रचलन में थी। बैव के अनुसार राजपूताना राज्यों में सबसे पहले मुद्रा का आरम्भ मेवाड़ में ही हुआ।[3] मेवाड़ में प्रमुख मुद्रा के रूप में इण्डोसेनियन प्रकार के सिक्के लम्बे समय तक चलन में रहे। ये सिक्के शुद्ध चांदी, तांबें एवं मिश्रित धातुओं के बने होते थे।

गुहिल या गुहदत्त कालीन सिक्के

मेवाड़ के गहलोत वंश का संस्थापक गुहिल को माना जाता है। मेवाड़ की रावल शाखा का इतिहास गुहिल वंश से ही आरम्भ माना जाता था। शिलादित्य के सामोली गाँव के वि.स. 703 के अभिलेख के अनुसार गुहिल का काल छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध (566 ई) था।[4] गुहदत्त कालीन सिक्के मेवाड़ के इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। छठी सदी के नौ सिक्के प्राप्त हुए हैं जिसमें तीन सिक्के तांबें के और बाकी चांदी की परत युक्त तांबे के हैं। इन सभी सिक्कों का वजन और अंकन भिन्न–भिन्न है। इन सिक्कों के अध्ययन से मेवाड़ के प्राचीन इतिहास को जानने में सहायता मिलती है। सन् 1869 में आगरा में खुदाई से दो हजार सिक्के प्राप्त हुए हैं।[5] इन पर संस्कृत भाषा में 'श्री गुहिल' लिखा है जिस कारण से इन्हें गुहिल के सिक्के माना जाता है। सामर के मतानुसार श्री गुहिल लेख अंकित सिक्का आगरा के पास अन्य किसी राजा का भी हो सकता है। जनरल कनिंघम को नरवर से एक अन्य सिक्का प्राप्त हुआ है। इस पर भी श्री गुहिलपति लेख लिखा है और इसकी लिपि आगरा से प्राप्त सिक्कों से मिलती है। कनिंघम के अनुसार यह सिक्का हूण राजा तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल के किसी वंशज का है। सिक्कों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में प्रमुख हाथ व्यापारियों का है। दूसरा सैनिक अभियानों के माध्यम से तथा तीर्थ यात्राओं के माध्यम से सिक्के मेवाड़ से आगरा तक पहुँचना संभव है।

भोज के सिक्के

गुहिल के उत्तराधिकारी भोज के दो सिक्कों का इतिहास में विवरण मिलता है। एक सिक्का तांबें का है तथा इसके ऊपरी तरफ राजा का धड बना है तथा उस पर लेख लिखा है। पीछे का भाग मलिन है। दूसरा सिक्का भी तांबे का बना है तथा अग्र भाग स्पष्ट है। अग्र भाग पर राजा का धड बना है। इसके सामने श्रीभोज खुदा है। इसका भी पश्च भाग मलिन है।

शिलादित्य के सिक्के

मेवाड़ के राजा शिलादित्य के बारे में सामोली गांव के एक अभिलेख (वि.सं. 703) से जानकारी प्राप्त होती है। शिलादित्य के समय के एक तांबें के सिक्के का उल्लेख इतिहास में मिलता है। सिक्के के अग्र भाग पर राजा का धड़ बना है तथा राजा का नाम शिला अंकित है जो कि स्पष्ट नहीं है। पीछे के भाग पर अग्निकुंड बना है।

बप्पा रावल के सिक्के

मेवाड़ के प्रमुख शासक बप्पा रावल के शासन काल में मेवाड़ में सबसे प्राचीन सोने के सिक्कों का उल्लेख मिलता है।[6] बप्पा रावल का शासन काल 734 से 753 ई. तक माना जाता है। भिन्न–भिन्न ऐतिहासिक ग्रन्थों, शिलालेखों, सिक्कों आदि में बप्पा रावल के भिन्न–भिन्न नाम यथा वप्पक, बप्पक, बाप, वप्प आदि मिलते हैं।

अजमेर से बप्पा रावल का सोने का सिक्का प्राप्त हुआ था। जिसके ऊपरी हिस्से में बांयी तरफ बिंदुनुमा माला के समान पंक्तियां बनी है। माला के नीचे श्री बप्प लेख अंकित है। माला के पास एक खडा त्रिशूल बना है। त्रिशूल के दांयी ओर शिवलिंग बना है जो बप्पा के इष्टदेव एकलिंग जी का सूचक है। शिव के दांहिनी ओर शिव का वाहन नंदी और शिवलिगं और नंदी के नीचे लेटी हुई अवस्था में शिव को प्रणाम करते हुए एक पुरूष की आकृति बनी है। जिसे बप्पा रावल की ही आकृति माना गया है।

सिक्के के पश्च भाग में तीन चिन्ह अंकित हैं। ये चिन्ह सूर्य तथा छत्र के हैं जो कि बप्पा रावल के सूर्यवंशी होने का संकेत है। तीनों चिन्हों के नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गाय तथा गाय का दूध पीता हुआ एक बछड़ा है। जिसके गले में एक घंटी लटक रही है। गाय और बछड़े के नीचे दो आडी लकीरे हैं जो कि नदी के दो तटों को दर्शाती है।

बंगाल के एक अंग्रेज अधिकारी आर. निकलसन के पास से बप्पा रावल का एक अन्य सोने का सिक्का भी प्राप्त हुआ है। गौरी शंकर ओझा से प्राप्त सिक्के और इस सिक्के के मध्य काफी समानता होने के कारण ए. एस. अल्टेकर ने इस सिक्के को बप्पा रावल का सिक्का बताया।

भर्तृभट्ट के सिक्के

बप्पा रावल के पश्चात् खुम्माण व मत्तट ने शासन किया परन्तु इनकी मुद्राओं की कोई जानकारी प्राप्त नहीं हुई। इसके बाद भर्तृभट्ट मेवाड़ का शासक हुआ जिनके चांदी के सिक्के प्राप्त हुऐं हैं। सिक्के पर शासक का धड बना है और उसके पास श्री लेख अंकित है। मेवाड़ के गुहिल वंश में भर्तृभट्ट नाम के दो शासकों की जानकारी मिलती है। यह सिक्का भर्तृभट्ट प्रथम का माना जाता है। जिसकी जानकारी चाटसू प्रशस्ति से प्राप्त होती है।[7]

सिंह के सिक्के

गुहिल वंश के इस शासक के काफी संख्या में सिक्के प्राप्त हुए। सिक्कों की प्रकृति व लिपि के अनुसार इस शासक का काल नवीं शताब्दी का माना गया है। इस समय रूपक मुद्रा प्रचलन में थी। सारणेश्वर मंदिर में प्राप्त आहड़ के अभिलेख के अनुसार दो रूपकों में एक घोडा खरीदा जाता था।[8] ये तांबे की मुद्राऐं थी जिन पर धड़ स्पष्ट नहीं था। राजा के धड के पास एक वर्ण तथा वर्ण के दाहिनी ओर एक बिन्दु अंकित है।

शालिवाहन के सिक्के

सिंह के पश्चात् मेवाड़ में खुमाण द्वितीय, महायक, खुमाण तृतीय, भर्तृभट्ट द्वितीय, अल्लट और नरवाहन शासक हुए। जिनकी मुद्राओं का इतिहास में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। सारणेश्वर अभिलेख में मेवाड़ में वि.सं. 1010 में प्रचलित मुद्राओं की जानकारी मिलती है। इसके अलावा स्थानीय सिक्कें इण्डोससानी की भी जानकारी मिलती है। सारणेश्वर शिलालेख में अल्लट के समय में वस्तुओं की अदला बदली के माध्यम की जानकारी प्राप्त होती है।

मुद्राओं के लिए द्रम व रूपक शब्दों का प्रयोग किया जाता था। द्रम चांदी का एक सिक्का था जिसका मूल्य चार से छः आना तथा रूपक छोटा चांदी का एक सिक्का होता था। मंदिर के खर्चे के लिए हाथी को बेचने पर एक द्रम तथा घोड़े के बदले में दो रूपक प्राप्त होते थे।

शालिवाहन अल्लट की तीसरी पीढ़ी का मेवाड़ का राजा था। इसके काल के सिक्के चांदी की परत लिये हुए तांबें के थे। सिक्के पर बने राजा के धड़ के ऊपर 'श्री शा' अंकित था। यहां शा का आशय शालिवाहन से लिया गया है।

शक्ति कुमार के सिक्के

शक्ति कुमार शालिवाहन का उत्तराधिकारी था। इसके समय का चांदी की परत युक्त तांबें का सिक्का प्राप्त हुआ है। जिस पर श्री स अंकित है। आहड़ के पास जैन मंदिर की सीढियों में लगे एक शिलालेख के अनुसार शक्ति कुमार के समय द्रम नामक सिक्के का उल्लेख मिलता है।[9]

शुचि वर्मा के सिक्के

शक्ति कुमार के पश्चात अंबा प्रसाद एवं उसके बाद शुचि वर्मा मेवाड़ का शासक हुआ। इसके समय के तांबे के सिक्के प्राप्त हुऐं हैं। सिक्के पर राजा के सिर के पीछे वाला हिस्सा एवं ताज दिखाई देता है। राजा के चेहरे के पास शुचि लिखा है जिसका आशय शुचि वर्मा से लिया जाता है।

हंसपाल के सिक्के

शुचिवर्मा के बाद हंसपाल की मुद्राओं का उल्लेख ही इतिहास में मिलता है। यद्यपि शुचिवर्मा के बाद नरवर्मा, कीर्तिवर्मा और योगराज मेवाड़ के शासक हुए परन्तु इनकी मुद्राओं को कोई उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता है। हंसपाल का उल्लेख कुभंलगढ़ और करणबेल के लेखों में मिलता है। इसका चांदी की परत युक्त तांबे का सिक्का प्राप्त हुआ है जिस पर ह वर्ण अंकित है।

वैरट के सिक्के

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने वैरट का उत्तराधिकारी हंसपाल को बताया है तथा वैरट की किसी भी मुद्रा का उल्लेख नहीं किया है। किन्तु सामर ने वैरट को हंसपाल का उत्तराधिकारी बताया है। सामर के अनुसार वैरट ने ताम्र मुद्राऐं जारी की जिस पर राजा के धड के ऊपर श्री वैराट अंकित है।

वैरिसिंह के सिक्के

जबलपुर में नर्मदा के भेराघाट से प्राप्त लेख के अनुसार वैरिसिंह का समय 11वीं सदी का माना जाता है।[10] भैराघाट शिलालेख एवं कुंभलगढ़ लेख में वैरिसिंह को शक्तिशाली एवं महान निर्माता बताया गया है। वैरिसिंह की तीन ताम्र मुद्राओं का इतिहास में उल्लेख मिलता है। जिन पर राजा के धड़ के पास श्री वे अंकित है।

मथन सिंह के सिक्के

मथन सिंह मेवाड़ के 37वें शासक थे। वैरिसिंह के पश्चात् हुए अनेक शासकों की मुद्राओं का कोई उल्लेख इतिहास में नहीं मिलता है। कुंभलगढ़ शिलालेख में मथनसिंह का नाम महण सिंह मिलता है। इसके समय का प्राप्त हुआ सिक्का अस्पष्ट है। सिक्का तांबे का है और उस पर श्री मा लिखा दिखाई देता है।

तेजसिंह के सिक्के

मथनसिंह के पश्चात पदम सिंह, जैत्रसिंह एवं तेजसिंह मेवाड़ के शासक हुए। चीरवा शिलालेख के अनुसार जैत्रसिंह को मेवाड़ का सबसे शक्तिशाली शासक माना गया है। तेज सिंह का शासन काल 1253 से 1267 ई. के मध्य का माना गया है। तेजसिंह के तीन तांबे के सिक्के इतिहास में प्राप्त हुए हैं।[11] सिक्के के ऊपर राजा के धड़ के पास ते लेख अंकित है।

रतनसिंह के सिक्के

तेजसिंह के पश्चात समर सिंह मेवाड़ के शासक हुए। इनके सिक्कों में बारे में इतिहास में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है। रतनसिंह समरसिंह के उत्तराधिकारी एवं मेवाड़ की रावल शाखा के अंतिम शासक

थे। रतनसिंह के दो सिक्कों का विवरण इतिहास में प्राप्त होता है। ये चांदी की परत युक्त तांबे के सिक्के हैं। सिक्कों पर राजा के धड़ के पास श्री रा लेख अंकित है।

सिक्कों का महत्व

मेवाड़ में मुद्राओं का निरन्तर विकास होने के साथ–साथ मुद्राओं की विभिन्न परिवर्तित अवस्थाऐं भी देखी गयी हैं। सिक्के केवल मेवाड़ के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत के इतिहास के स्त्रोत के रूप में महत्वपूर्ण हैं। सिक्कों के अध्ययन से मेवाड़ के राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक सभी पहलुओं की ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है।

मेवाड़ की रावल शाखा से संबंधित मुद्राओं के अध्ययन पर रावल शासकों यथा गुहदत्त, भोज, शिलादित्य, बप्पा, शालिवाहन, शुचिवर्मा, रतनसिंह आदि के राजनैतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। सिक्कों के अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि मेवाड़ पहली रियासत थी जिसका ब्रिटिश सरकार के साथ मित्रवत व्यवहार था। सिक्कों पर अंकित लेख, दुर्ग इत्यादि से यह भी ज्ञात होता है कि कोई राजा कितना समर्थ और शक्तिशाली था। साथ ही किसी स्थान विशेष की महत्ता भी सिक्कों के माध्यम से ज्ञात होती है।

सिक्के आर्थिक समृद्धि का प्रतीक माने जाते हैं। मेवाड़ में निरन्तर सिक्के जारी होते रहे जिसके कारण मेवाड़ में विशाल भवनों एवं जलाशयों का निर्माण हुआ एवं मेवाड़ की प्रगति होती रही। मेवाड़ में व्यवस्थित मुद्रा होने के कारण ही मेवाड़ की आर्थिक दशा दयनीय नहीं हुई एवं आर्थिक दशा खराब होने की स्थिति होने पर मुद्रा व्यवस्था में सुधार किया गया। इस प्रकार सिक्के मेवाड़ के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का बोध कराते हैं। अतः आज के वैज्ञानिक युग में यह आवश्यक है कि पुरानी सांस्कृतिक विरासत को सहेज कर रखा जाए ताकि आने वाले समय में भी मेवाड़ के गौरव व सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन सुगम हो।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, परमेश्वरी लाल–कॉइन्स, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, दिल्ली–2006, पृ.1
2. विद्यालंकार प्राणनाथ –सूर्यकुमारी पुस्तक माला छः मुद्राशास्त्र, पहला परिच्छेद, काशी प्रचारिणी सभा, प्रथम संस्करण 1980, पृ.2
3. वैब, विलियम विल्फ्रेड–द करैन्सीज ऑफ द हिन्दू स्टेट्स ऑफ राजपूताना, पृ. 4
4. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयुपर राज्य का इतिहास– प्रथम खण्ड, पृ. 96–98
5. कनिंघम – आर्कियोलोजीकल सर्वे रिपोर्ट भाग – 4, 1871–72, पृ. 95–96
6. जगदीश गहलोत – राजपूताने का इतिहास, भाग प्रथम, पृ. 120, 170, 182
7. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयुपर राज्य का इतिहास, पृ. 117
8. दशरथ शर्मा – राजस्थान थ्रो दी एजेज वो प्रथम, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर प्रथम संस्करण, 1966, पृ. 503
9. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, उदयुपर राज्य का इतिहास, पृ. 130–132
10. बाबू रामनारायण, राजस्थान रत्नाकर राजपूताने के गुहिल वंशी राज्यों का इतिहास, पृ. 40
11. दशरथ शर्मा – राजस्थान थ्रो दी एजेज वो प्रथम, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर प्रथम संस्करण, 1966, पृ. 744

❖◆❖